पाठ 1

समर्पण

मन समर्पित तन समर्पित,
और यह जीवन समर्पित।
चाहता हूँ देश की धरती,
तुझे कुछ और भी दूँ।।

माँ तुम्हारा ऋण बहुत है, मैं अकिंचन,
किंतु इतना कर रहा, फिर भी निवेदन।
थाल में लाऊँ सजाकर भाल जब भी,
कर दया स्वीकार लेना, वह समर्पण,
मन समर्पित, प्राण अर्पित
रक्त का कण–कण समर्पित,
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।।

माँज दो तलवार को लाओ न देरी,
बाँध दो कसकर, कमर पर ढाल मेरी,
भाल पर मल दो, चरण की धूल थोड़ी,
शीश पर आशीष की छाया घनेरी,
स्वप्न अर्पित, प्रश्न अर्पित,
आयु का क्षण–क्षण समर्पित
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।।

तोड़ता हूँ मोह का बंधन, क्षमा दो,
गाँव मेरे द्वार घर–आँगन, क्षमा दो,
आज सीधे हाथ में तलवार दे दो,
और बाएँ हाथ में ध्वज को थमा दो।
ये सुमन लो, यह चमन लो,
नीड़ का तृण–तृण समर्पित,
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।।

रामावतार त्यागी

शब्दार्थ

तृण	–	तिनका	घनेरी	–	सघन, गहरी
भाल	–	ललाट, मस्तक	अकिंचन	–	गरीब
सुमन	–	फूल, पुष्प			

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. कवि किसके प्रति समर्पित होने की बात कह रहा है?
2. 'भाल पर मल दो, चरण की धूल थोड़ी' से क्या तात्पर्य है?
3. कवि किस–किस से क्षमा माँगता है?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. समर्पण कविता के माध्यम से कवि हमें संदेश देना चाहता है–

   (क) सर्वस्व समर्पण का (ख) स्वाभिमान का

   (ग) परोपकार करने का (घ) स्वावलंबन का ( )

2. कविता के अनुसार हम ऋणी हैं–

   (क) मातृभूमि के (ख) साहूकार के

   (ग) डॉक्टर के (घ) किसान के ( )

3. थाल में भाल सजाकर लाने की बात कही है–

   (क) प्राप्ति के लिए (ख) स्वार्थ के लिए

   (ग) शील के लिए (घ) समर्पण के लिए ( )

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें

1. माँ तुम्हारा ऋण बहुत है, मैं .....। (अकिंचन / निवेदन)
2. मन समर्पित ..... अर्पित, रक्त का कण–कण समर्पित। (धरती / प्राण)
3. तोड़ता हूँ ..... का बंधन। (मोह / क्षमा)
4. .....का तृण–तृण समर्पित। (सुमन / नीड़)

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. कविता में किसके चरण की धूल भाल पर मलने की बात कही है?
2. कवि 'माँ' का ऋण कैसे उतारना चाहता है?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए

(क) मन समर्पित, प्राण अर्पित,
रक्त का कण–कण समर्पित।

(ख) ये सुमन लो, यह चमन लो,
नीड़ का तृण–तृण समर्पित।

(ग) स्वप्न अर्पित, प्रश्न अर्पित,
आयु का क्षण–क्षण समर्पित।

2. कविता में कवि मातृभूमि पर क्या–क्या न्योछावर कर देना चाहता है? अपने विचार विस्तार से लिखिए।

भाषा की बात

1. नीचे लिखे पदों में समास का नाम बताइए–
क्षण–क्षण, मोह–बन्धन, घर–आँगन
2. निम्नलिखित शब्दों के दो–दो पर्यायवाची शब्द लिखिए–
तलवार, धरती, सुमन, चमन
3. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ जानकर वाक्य में प्रयोग कीजिए–
निवेदन, अर्पित, भाल, क्षमा
4. निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखिए–
आशिस, सपन, अरपित, रिण

पाठ से आगे

1. हमारे लिए राष्ट्रहित सर्वोपरि है। हम ऐसे क्या कार्य कर सकते हैं, जिनसे हमारे राष्ट्र का विकास हो सके, लिखिए।
2. देश की सेवा में हम सब क्या–क्या कर सकते हैं? समूह में चर्चा कर लिखिए।

सृजन

'मेरा संकलन' में देशभक्ति गीतों को लिखिए।

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

"जहाँ समर्पण की वृत्ति होती है, वहाँ अंतःकरण शुद्ध होता है। समर्पण जितना बढ़ता है – जीवन में सौम्यता, सरलता, शुद्धता, निर्मलता उतनी ही आती रहती है।

केवल पढ़ने के लिए

हम करें राष्ट्र आराधन

हम करें राष्ट्र आराधन,
तन से, मन से, धन से,
तन, मन, धन, जीवन से,
हम करें राष्ट्र आराधन।

अंतर से, मुख से, कृति से,
निश्चल हो निर्मल मति से,
श्रद्धा से, मस्तक नति से,
हम करें राष्ट्र अभिवादन।।

अपने हँसते शैशव से,
अपने खिलते यौवन से,
प्रौढ़ता पूर्ण जीवन से,
हम करें राष्ट्र का अर्चन।।

अपने अतीत को पढ़कर,
अपना इतिहास उलटकर,
अपना भवितव्य समझकर,
हम करें राष्ट्र का चिंतन।।

हैं याद हमें युग–युग की,
जलती अनेक घटनाएँ,
जो माँ की सेवा पथ पर,
आयीं बनकर विपदाएँ।

हमने अभिषेक किया था,
जननी का अरि–षोणित से,
हमने शृंगार किया था,
माता का अरि–मुण्डों से।।